शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 12 अक्टूबर - दिसंबर - 2025 Impact factor– 03

सिरमौर जिला के गिरिपार क्षेत्र में प्रचलित प्रसिद्ध पारंपरिक त्योहार 'बूढ़ी दिवाली' एक सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. मलकीयत सिंह
निर्देशक
सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
हि. प्र. केंद्रीय विश्वविद्यालय-धर्मशाला

सविता
शोध छात्रा
हिंदी विभाग
ई- मेल- sharmasavita.sml@gmail.com
मो- 8629890435

सारांश :- भारत विविधताओं और बहुलताओं का देश है, जो भारत की प्रमुख विशेषता है। यहां उत्तर दिशा में पश्चिमी हिमालय के रमणीय सौंदर्य में विराजमान हिमाचल प्रदेश है, जिसे विभिन्न संस्कृतियों का संगम स्थल माना जाता है। हिमाचल प्रदेश भौगोलिक विविधता प्राकृतिक सौंदर्य विभिन्न संस्कृतियों एवं लोक त्योहारों का प्रदेश है । हिमाचल प्रदेश के दक्षिण भाग में सांस्कृतिक समृद्धता से परिपूर्ण सिरमौर जनपद है। सिरमौर जनपद भौगोलिक रूप से बहने वाली गिरि नदी के नाम पर दो भागों **'गिरीआर'** और **'गिरीपार'** में बांटा गया है।गिरिपार पूरी तरह पहाड़ी क्षेत्र है।यहां का लोक त्योहार अत्यंत प्राचीन एवं वैविध्यपूर्ण है,जो यहां के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन से ओत-प्रोत है। इसमें लोक जीवन के हर्ष-विषाद, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा एवं आशा-निराशा के भाव उदगार समाहित है।सिरमौर जनपद की सांस्कृतिक पहचान में 'बूढ़ी दिवाली' लोक त्योहारों में विशिष्ट स्थान रखती है, जिसे 'गिरिपार' क्षेत्र के मानस द्वारा 'मार्गशीर्ष' मास की अमावस्या को मनाया जाता है।यह शोध पत्र इस पारंपरिक त्योहार के ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण तथा विवेचन करता है, जिसमें सिरमौर जिले के 'गिरिपार' क्षेत्र के लोगों की अटूट भूमिका और 'बूढ़ी दिवाली' मनाने की गतिविधियों का विस्तृत विवरण शामिल हैं। आधुनिकता की होड़ के बावजूद यह अध्ययन इस अनमोल उत्सव के संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता पर जोर देता है। एक शोधार्थी के रूप में त्योहार की मान्यता, उत्पत्ति ,विकास और वर्तमान सामाजिक प्रासंगिकता का गहन अध्ययन-मनन करना आवश्यक है, ताकि हम सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक परंपराओं की जटिलताओं को उचित ढंग से समझ सकें। यह अध्ययन न केवल इस विशेष त्योहार पर प्रकाश डालेगा, अपितु अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं के विश्लेषण के लिए भी एक उपयोगी ढांचा प्रदान करेगा।

बीज शब्द :- गिरिपार, बूढ़ी दियाली, भीयुरी, हारूल, चोल्टू, बलिराज, मशाल, लिंबर।

प्रस्तावना:-हिमाचल प्रदेश की संस्कृति एवं त्योहारों में दिवाली एक प्रसिद्ध पर्व है। पूरे देश में दिवाली का पर्व लंका विजय के उपरांत भगवान राम के लंका से अयोध्या लौटने की खुशी में मनाया जाता है। पर'बूढ़ी दिवाली' का प्रसंग भगवान राम के अयोध्या वापस लौटने की खुशी के साथ-साथ 'गिरिपार'मानस के लोग इस त्योहार का संबंध महाभारत युद्ध में कौरवों पर पांडवों की विजय से जोड़कर भी देखते हैं। धर्मराज युधिष्ठिर के राज तिलक की खुशी में 'बूढ़ी दिवाली'पर्व मनाया जाता है। सिरमौर के 'गिरिपार' क्षेत्र के दरदराज एवं दुर्गम इलाकों में 'बूढ़ी दिवाली' मनाने का रिवाज सदियों पुराना है। यह त्योहार 'मार्गशीर्ष' महीने के अमावस्या को मनाया जाता है। इस क्षेत्र के लोग 'बूढ़ी दिवाली' का पर्व बड़े ही आनंद से मानते हैं। जिसमें बच्चे, बूढ़े, जवान एवं औरतें सभी बड़े चाव से 'बूढ़ी दिवाली' में भाग लेते हैं। गांव के प्रत्येक घर में इस पर्व की तैयारी एक महीना पहले से शुरू हो जाती है।

नामकरण :-'बूढ़ी दिवाली' नाम का संबंध पुरानी या बीती हुई घटना से जोड़ा जाता है। यह पर्व दिवाली के करीब एक महीने बाद मनाया जाता है। यह दिवाली जो समय की देरी के कारण सिरमौर पर्वतीय क्षेत्रों में बाद में मनाई जाती है।

बूढ़ी दिवाली के संदर्भ में विभिन्न किंवदंतियां:-सिरमौर जिला के गिरिपार क्षेत्र में 'बूढ़ी दिवाली' क्यों मनाई जाती है? इसके पीछे विभिन्न लोगों की अलग-अलग किंवदंतियां है जिसका संबंध यहां के लोग पौराणिक ग्रंथों रामायण, महाभारत, राजा बलि तथा फसल कटाई में देरी से जोड़कर देखते है।

"यह त्योहार परंपरागत दिवाली से ठीक एक मास उपरांत मगहर की अमावस्या को मनाया जाता है। यह तीन दिन तक मनाया जाता है। 'दियाली' के दिन मंदिर के आंगन में या निकट के पहाड़ी खेत में आग जलाई जाती है जिसे 'बलराज' कहा जाता है।"[1]

एकमत के अनुसार-'अमर सिंह':- "इसका मुख्य कारण यह है कि श्री राम जी के चौदह वर्षों बाद अयोध्या लौटने की सूचना पहाड़ी व दुर्गम क्षेत्र 'गिरिपार' में देरी से मिली। अतः दिवाली के ठीक एक मास पश्चात अमावस्या को यह पर्व धूमधाम से मनाया जाता है।"[2]

दूसरी मत के अनुसार-वंशी राम शर्मा :- "इसका दूसरा कारण यह है कि शीताधिकाएं से इस क्षेत्र में फसल जल्दी पक कर तैयार नहीं होती। देरी से फसल पकने के कारण दिवाली के स्थान पर 'बूढ़ी दिवाली' मनाने का प्रचलन है।"[3]

'बूढ़ी दिवाली'मात्र एक पारंपरिक त्योहार ही नहीं, अपितु यह समाज संचार, संदेश, एवं मूल्य के संप्रेषण का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। 'गिरिपार' क्षेत्र में यह त्योहार लगभग एक सप्ताह तक चलता है। **"कंवर रणजोर सिंह के शब्दों में:-**"गिरिपार' क्षेत्र में दिवाली मनाई जाती है एक छोटी तथा एक बड़ी या बूढ़ी दीवाली होती है। गिरिपार के लोक त्योहारों में नाचने, गाने, बजाने के बहुत शौकीन है। स्त्री- पुरुष एक साथ नृत्य करते हैं जिसको स्थानीय बोली में **'गी'** कहते हैं। उस समय नगाड़े,शहनाई, बाजे आदि खूब बजाए जाते हैं।"[4]

अन्य मत के अनुसार-'बूढ़ी दिवाली' उत्सव की शुरुआत**'भीम अमावस्या'** की आधी रात के बाद मशालो के जुलूस से होती है। भीम अमावस्या को गांव के लोग कुल देवी के प्रांगण में आधी रात के पश्चात लगभग चार बजे एकत्र होते हैं। हजारों ग्रामीण रात के अंधेरे में जब उल्लास भरे स्वरों में कौरवों पर पांडवों की विजय का उद्घोष करते हैं तो यह दृश्य रोमांचित एवं चकित कर देता है। यहां की बोली में इस उद्घोष को **'लिंबर'** कहा जाता है। रात के अंधेरे में ढोल, नगाड़े, दूमाना, ताली तथा रणसिंघा जैसे वाद्य यंत्रों की थाप पर गांव के सभी पुरुष रात के

समय मशाल यात्रा निकालते हैं। प्रांगण में देवी-देवताओं का वंदन तथा नमन कर **'लिंबर'** लगाते हैं। गांव के सभी पुरुष मशाल लेकर जुलूस के रूप में गांव के एक छोर से चलकर दूसरे निर्धारित स्थान पर विशाल **'बलिराज'** को जलाते हैं।

गिरिपार मशाल लोक यात्रा

'बलिराज' का संबंध राजा बलि से जोड़ा गया है। भगवान विष्णु ने जब वामन अवतार लिया था तब राजा बलि के घमंड को तोड़ने के लिए तीन पग धरती मांगी थी। तीसरे पग में राजा बलि के सिर पर विष्णु ने पांव रखा था। उसी समय राजा बलि धरती में समा गए थे, इस उपलक्ष्य पर 'बलिराज' को जलाया जाता है। इसे बुराई पर अच्छाई की जीत यानी कौरवों पर पांडवों की विजय तथा पांडवों के स्वराज की स्थापना का प्रतीक भी माना जाता है। जब पांडवों ने अपना अज्ञातवास हिमालय क्षेत्र में काटा, तो वह यहां से लौट कर हस्तिनापुर पहुंच गए। इस खुशी के अवसर पर लोग नाचे,गाए, झमें थे। इसी समय से यह पर्व'बूढ़ी दिवाली' के रूप मनाया जाता है।'मार्गशीर्ष'मास की अमावस्या को **'भीम अमावस्या'** भी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि भीम का विवाह हिडिंबा से हुआ था और भीम एक महीने तक देवी हिडिंबा के साथ रहे थे। भीम एक महीने पश्चात हस्तिनापुर पहुंचे। इसी अमावस्या के दिन लोगों ने खुशी मनाई ।पांडवों से इस रात का संबंध जोड़ा जाता है। इसी कारण 'भीम अमावस्या' नाम पड़ा। रात खुलने से पूर्व 'बलिराज' दहन के बाद मशाल जुलूस नाचता- झमता वापिस कुलदेवी के प्रांगण में पहुंचता है। गिरिपार पिछड़े क्षेत्र में 'बूढ़ी दिवाली' वाले त्योहार यूं तो हजारों गांव में पूरे जोश के साथ मनाया जाता है परंतु सिरमौर जिला के शिलाई तहसील के द्राबिल, टीटीयाना, शीला तथा नाया पंजोड़ आदि गांवों का 'बूढ़ी दिवाली' त्योहार आज भी अपने प्राचीन और पारंपरिक स्वरूप के लिए अलग पहचान रखता है। इन गांवो में 'बूढ़ी दिवाली' के पर्व के लिए लोगों में उमड़ने वाला उत्साह, उत्तेजना और दिल जान से इस पर्व को मनाने का जुनून आज भी आश्चर्य चकित कर देता है। ऐसा लगता है मानो यहां का जन सैलाब पूरे साल इस अनूठे उत्सव मनाने में आंखें बिछा के बैठा हो। इस त्योहार के उद्गम को लेकर अलग-अलग किंवदंतियां प्रचलित है जिससे एक निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सकता है। लेकिन इस त्योहार के नामकरण 'बूढ़ी दिवाली' से इस संबंधी दीपावली से अधिक प्रतीत होता है। क्योंकि भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र दुर्गम है। अतः यह तर्क भी जुड़ता प्रतीत होता है।

सांस्कृतिक लोक नृत्य:-सिरमौर जनपद के 'गिरिपार' क्षेत्र में 'बूढ़ी दिवाली' पर्व पर विभिन्न लोक नृत्यों का आयोजन देखने को मिलता है। इन लोक नृत्यों में रासा नृत्य, चोल्टू नृत्य, खेलटू नृत्य, हारूल नृत्य तथा गी नृत्य आदि प्रमुख हैं। इस अवसर पर पूरे दिन गांव के पुरूषों, महिलाओं और मेहमानों द्वारा हारूल गीत गाकर रासा नृत्य का गायन वाद्य यंत्रों को बजाकर करते हैं।

हारूल लोकगीत में राजपूतों की वीर गाथाएं गाई जाती हैं। इसमें राजपूतों का मुगलों के साथ युद्ध, राजपूत की राजपूत के साथ लड़ाई तथा यह युद्ध क्यों हुआ? कैसे हुआ? किसकी विजय हुई? इन वीर गाथाओं में उन सब का गान होता है। इसी बीच दोपहर के समय गांव के समस्त पुरुषों द्वारा पारंपरिक परिधान चोल्टु पहनकर **'घुंडिया रासा'** नृत्य किया जाता है।आज भी हर घर के पुरुष द्वारा इस कढ़ाईनुमा श्वेत वस्त्र पहनकर वाद्य-यंत्रों की चाप पर मस्त लोक नृत्य करते हैं। 'बूढ़ी दिवाली' के अवसर चोल्टू रासा नृत्य की प्रक्रिया के बीच-बीच में गांव के स्थानीय पुरुष कलाकारों द्वारा खेल्टू नृत्य (खेल) का आयोजन किया जाता है। खेल्टू नृत्य का मुख्य उद्देश्य लोक मनोरंजन तथा लोक को उपदेश देना होता है। इसमें कलाकारों के द्वारा हास्य और व्यंग्य वाक्य कहकर दर्शकों को रोमांचित किया जाता है। 'खेल्टू' नृत्य का प्रमुख आधार शिक्षा, नारी, नशा निवारण, देवता पूजन, बाघ मारा, जैसे विषयों पर हास्य पूर्ण वाक्य कहे जाते हैं। **पवन बक्शी के अनुसार** "दीपावली के ठीक एक मास बाद मनाया जाने वाले मशालों का उत्सव इसमें चार पांच दिन खान-पान व नाच-गाना तथा सिंह खेल आदि का आयोजन होता है।"[5]

गिरिपार चोल्टू रासा नृत्य

वेश-भूषा:-इस त्योहार के अवसर पर गिरिपार के लोगों द्वारा पारंपरिक वस्त्र पहने जाते हैं। पुरुषों के द्वारा लोइयां, चोल्टू, सूथन, कुर्ता, टोपी और महिलाओं के द्वारा लुगड़ी, ढाठू, सदरी, गरारा-झगा आदि परिधान पहने जाते हैं। महिलाओं के द्वारा सोने-चांदी के आभूषणों को धारण किया जाता है जिसमें हार, मंगलसूत्र, बाजू बन्द, टिका, पैंडल आदि पहने जाते हैं। अतः इस वेश-भूषा के माध्यम से न केवल यहां के लोक पहनावे का ही पता नहीं चलता है अपितु लोक जीवन की सांस्कृतिक झलक पेश होती है।

गिरिपार लुगड़ी पारंपरिक परिधान

खान-पान:-गिरिपार क्षेत्र में 'बूढ़ी दिवाली' के त्योहार पर एक सप्ताह तक भिन्न-भिन्न पारंपरिक व्यंजन बनाएं जाते हैं। जिसमें मुख्य रूप से तेलपाकी, खिंडा, गुलगुले, हलौउले, मीठी रोटी, सिड्कू, असकली, सुतौउले आदि पकवान बनाए जाते हैं। मेहमानों को चाय के साथ मुडा, शाकुली, अखरोट, तथा चिवड़ा परोसा जाता है। यह पारंपरिक व्यंजन यहां के संस्कृति एवं त्योहार की अलग पहचान प्रदर्शित करते हैं

अन्य लोक कथा प्रसंग और मिथक-इस पर्व में धार्मिक मान्यताएं, आस्थाएं, परंपराएं तथा लोक मनोरंजन के साथ-साथ अन्य लोक कथा प्रसंग का समावेश देखने को मिलता है। अन्य लोक कथा में भीयुरी कथा बहुत प्रसिद्ध है। अमावस्या का दूसरा दिन 'गिरिपार' मानस द्वारा **'भीयुरी'** के नाम से मनाया जाता है।'भीयुरी' के दिन गांव की सभी कुंवारी लड़कियां तथा शादी शुदा धीयांटी सामूहिक रूप से देवता के आंगन में 'भीयुरी' गीत पर नृत्य करती हैं। यह गीत 'भीयुरी' नामक बेटी की याद में गाया जाता है,जो किसी कारण 'बूढ़ी दिवाली' के अवसर पर अपने पिता के घर नहीं आ पाई थी। पिता पुत्री की विछोह भावना से परिपूर्ण इस शोक गीत में वाद्य- यंत्रों का प्रयोग वर्जित माना जाता है।'भीयुरी'गीत गाने के पश्चात गांव की सभी धीयांटी को महिलाओं के द्वारा मुड़ा,शाकुली, चिवड़ा और अखरोट दिया जाता है, जिसे 'भीयुरी' का हिस्सा कहा जाता है।

भीयुरी लोकगीत के बोल और भावार्थ:—सिरमौर के 'गिरिपार' क्षेत्र में 'भीयुरी' लोकगीत गायन परंपरा की एक समृद्ध और विविध श्रृंखला पाई जाती है। इस लोकगीत का अपना विशिष्ट भाव,लय तथा सामाजिक संदेश है,गीत के भाव बोल इस प्रकार है।

साक्षात्कार:- 'प्रमिला देवी', 'मालो देवी','जानकी देवी'।[6]

बोल

फुल्लो फुलिटु दाए।
फुल्लो फुलिटु दाए।।
ओकी धीयाणी रोइ आए।
मेरी ना भीयुरी आए।।
बेलुआ बुल्बे भाई।
भीयुरी रो बोयद जाए।।
जादा नी भाजदा ठकरानी।
पराणु ना भीयुरी रो घर।।

भावार्थ:-उपर्युक्त लोक गायन के माध्यम से टोलियों में लोकगीत गाने वाली स्त्रियां गा रही है-कि बाक़ी सभी लड़कियां अपने ससुराल से मायके आ गई है परंतु'भीयुरी' नहीं आई। इसके पश्चात'भीयुरी'की माता बेलुआ संदेशवाहक को बुलाने के लिए भेजती है। बेलुआ इस पर कहता है कि मैं जाने से मना नहीं करता किंतु मैं'भीयुरी' के घर को नहीं पहचानता।

बोल

सेजों ए भीयुरी रो घर।
जिंदा ए कुकड़ा चम्बी।।
बेलुआ बुल्बे भाई।
गांव घर कैड़ जाय।।
बेलुआ थूआ परेसु।
भीयुरी ए पूछना लाए।।
ख़ुशी अस बाबा और माई।
ख़ुशी अस भाभी और भाई।।

साक्षात्कार :- 'निशा शर्मा','रवीना शर्मा'। [7]

भावार्थ:-उपर्युक्त लोकगीत गाने वाली लड़कियां कह रही हैं कि- माता जी 'भीयुरी' के घर की पहचान बताते हुए कहती है कि उसका पूरा घर लकड़ी से बना हुआ है । घर में लंबी सीढ़ियां तथा मुर्गा है। उसके बाद बेलुआ'भीयुरी' के घर चला जाता है। वहां पहुंचकर उसका हाल-चाल जान लेता है। 'भीयुरी' भी अपने सभी मायके वालों का हाल-चाल जान लेती है।

बोल

परेसु बुलुबे साथिया।
भीयुरी पावणी गई आय।।
बीच जानि रास्ते।
भीयुरी उदी गई जाए।।
बेलुआ बुल्बे भाई।
भीयुरी उदी गई जाए।।

भावार्थ:-उपर्युक्त लोकगीत गाने वाली स्त्रियां गा रही हैं कि- बेलुआ 'भीयुरी' से मायके चलने के लिए प्रार्थना करता है कि वह उसके साथ मायके चले। उसके उपरांत बहुत दोनों 'भीयुरी' के मायके के लिए प्रस्थान करते हैं। गिरिपार अत्यंत दुर्गम तथा पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण 'भीयुरी' की रास्ते में चलते समय गिरने के कारण मृत्यु हो जाती है। 'गिरिपार' क्षेत्र के संपूर्ण लोकगीतों में 'भीयुरी' लोकगीत का अपना एक ऐतिहासिक, सामाजिक और धार्मिक महत्व है वह 'गिरिपार' के किसी एक गांव की आदर्श, शालीन तथा कर्तव्य परायण लड़की मानी जाती थी। जिस कारण गीत में बताया गया है की 'भीयुरी' की मायके जाते समय गिरकर मृत्यु हो गई थी। इसी कारण संपूर्ण 'गिरिपार' लोक में 'भीयुरी' को अमर करने के लिए गीत गया जाता है ताकि 'बूढ़ी दिवाली' भी ना टूटे और 'भीयुरी' जैसी आदर्श स्त्री को अमरता मिले। इस गीत के महत्व तथा प्रासंगिकता को देखकर पता चलता है कि 'गिरिपार' क्षेत्र में तत्कालीन समय में महिलाओं को सम्मान देने के लिए उसके मृत्यु शोक पर अमरता के गीत गाए गए। आज भी सिरमौर के 'गिरिपार' क्षेत्र में 'भीयुरी' लोकगीत गांव की धीयांटी द्वारा उसी प्रकार गाया जाता है जिस प्रकार पहले गाया जाता था जिससे 'गिरिपार' के सांस्कृतिक संरक्षण का पता चलता है।

निष्कर्ष:-'बूढ़ी दिवाली' त्योहार कृषि समृद्धि, धार्मिक आस्था , पितरों की स्मृति और सामूहिक मेलजोल का प्रतीक है। यह पर्व सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण का एक ऐसा सूचक है जो प्राचीन समय से ही अपनी महक एवं मिठास को जीवंत रखे हुए हैं। इस त्योहार का सुखद पहलू यह है कि आधुनिकता की चकाचौंध में भी ग्रामीण क्षेत्र में यह पर्व अपनी मौलिकता एवं परंपरागत स्वरूप को संजोए रखते हुए दिखाई पड़ता है। इस सांस्कृतिक त्योहार को संरक्षित और संवर्धित करना हम सभी का कर्तव्य है, ताकि भविष्य में आने वाली पीढ़ियां भी इस समृद्ध परंपरा का आनंद ले सकें और इससे प्रेरणा प्राप्त करे।

****

संदर्भ :-

1.जगमोहन बलोकरा,'अलौकिक हिमाचल प्रदेश' नई दिल्ली,2016।
2. साक्षात्कार, अमर सिंह, गांव-द्राबिल, दिनांक 13.9. 2025 तहसील, शिलाई।
3. साक्षात्कार,वंशी राम शर्मा, गांव- टीटीयाना, दिनांक,18.9.2025 तहसील,कमराऊ।
4. कंवर रणजोर सिंह, 'सिरमौर रियासत का इतिहास', हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी- शिमला,2007।
5. पवन बक्शी, 'हिमाचल गिरिपार का हाटी समुदाय', आज़मी प्रकाशन पावटा साहिब- सिरमौर, 2011।
6. साक्षात्कार 'प्रोमिला देवी', 'जानकी देवी', 'मालो देवी', गांव-शीला, दिनांक 5.10.2025 तहसील, कमराऊ- कफ़ोटा।
7. साक्षात्कार 'रवीना शर्मा', 'निशा शर्मा', गांव- खड़काहा दिनांक 18.10.2025 तहसील- शिलाई ।